सत्यमेव जयते

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी.

राजभाषा प्रेरणा

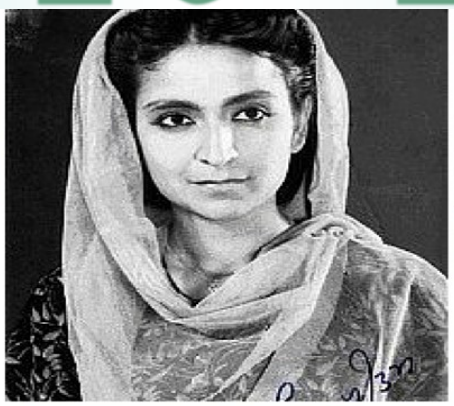

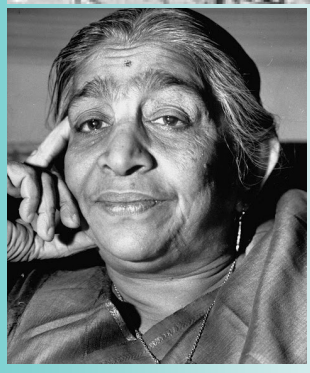
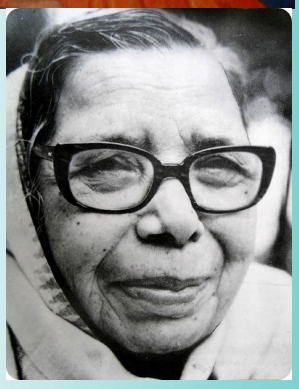

भारत की मशहूर कवयित्रियाँ विशेषांक

हिंदी ई पत्रिका

जून 2019

संयोजक

बैंक ऑफ़ इंडिया

रिश्तों की जमापूँजी

अंक 4

सत्यमेव जयते

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी.

अंतरंग

- सुभद्रा कुमारी चौहान
- मीराबाई
- महादेवी वर्मा
- सरोजिनी नायडू
- बालमणि अम्मा
- कमला सुरैया
- अमृता प्रीतम
- नंदिनी साहु
- काव्य, कविता या पद्य, साहित्य की विधा

'प्रेरणा' ई पत्रिका संपादन एवं आर्ट श्री रमेश गायकवाड संपादक **राजभाषा 'रत्नसिंधु'** सदस्य सचिव नराकास

सत्यमेव जयते

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी.

साथियों ,

हमारी समिति द्वारा एक अनोखा नवोन्मेषी प्रयोग हमेशा किया जाता है , जिसमें वेबसाइट से लेकर ऑनलाइन रिपोर्ट प्रस्तुति हो या ई पत्रिका **प्रेरणा** का नाम लेना आवश्यक है, यह सदस्यों को राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़ी जानकारी प्रस्तुत करने के साथ साथ हिंदी के साहित्यकारों के परिचय का प्रयास करती है । पिछले अंक में महान संत कवीयों को प्रस्तुत किया था इस बार कवियित्रियों को प्रस्तुत किया जा रहा है।

भारत के खजाने में कई काबिल और महान कवयित्रियाँ भी रहीं हैं जिनकी कविताओं ने पाठकों के दिलों में जगह बनाई है। भारत हमेशा से ही रचनाकारों का घर रहा है। यहां के लेखक, कलाकार, कवि, मूर्तिकार, गीतकार आदि लोगों ने ही तो यहाँ की संस्कृति और इतिहास को आज तक अपनी रचनाओं द्वारा जीवित रखा है।

जानिए ऐसी ही भारतीय कवयित्रियों के बारे में ...

सभी को मंगल कामनाएं ।

धन्यवाद ।

हस्ता/-

28 जून 2019

(अतुल सातपुते)

अध्यक्ष एवं उप महाप्रबंधक

सुभद्रा कुमारी चौहान

सुभद्रा कुमारी चौहान भारत की सबसे लोकप्रिय कवयित्रियों में से एक हैं। इनकी कविता "झाँसी की रानी" बच्चे-बच्चे को मुँहजबानी याद रहती है। सुभद्रा कुमारी अंग्रेजी शासन के खिलाफ आवाज उठाती थीं। इनकी कविताएं भी वीर रस की हैं। अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन में कई बार वो जेल भी गईं। सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म १९०४ में निहालपुर गाँव में हुआ था। "वीरों का कैसा हो बसंत" इनकी लोकप्रिय रचनाओं में से एक है।

खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी

सिंहासन हिल उठे राजवंषों ने भृकुटी तनी थी,
बूढ़े भारत में आई फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सब ने मन में ठनी थी।
चमक उठी सन सत्तावन में, यह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।
कानपुर के नाना की मुह बोली बहन छब्बिली थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वो संतान अकेली थी,
नाना के सँग पढ़ती थी वो नाना के सँग खेली थी
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी, उसकी यही सहेली थी।
वीर शिवाजी की गाथाएँ उसकी याद ज़बानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वो स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युध-व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना यह थे उसके प्रिय खिलवाड़।
महाराष्ट्रा-कुल-देवी उसकी भी आराध्या भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ बन आई रानी लक्ष्मी बाई झाँसी में,
राजमहल में बाजी बधाई खुशियाँ छायी झाँसी में,
सुघत बुंडेलों की विरूदावली-सी वो आई झाँसी में।
चित्रा ने अर्जुन को पाया, शिव से मिली भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी। उदित हुआ सौभाग्या, मुदित महलों में उजियली च्छाई,
किंतु कालगती चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई,
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाई,
रानी विधवा हुई है, विधि को भी नहीं दया आई।
निसंतान मारे राजाजी, रानी शोक-सामानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।

मीराबाई

मीराबाई सोलवीं सदी की हिन्दू कवयित्री थीं। मीरा श्रीकृष्ण की परम भक्त थीं। वो भक्तिकाल की सबसे चर्चित कवयित्री हैं। मीरा के पदों में कृष्ण भक्ति ही झलकती थी। कृष्ण को वे अपना स्वामी (पति) मानती थीं। मीराबाई का जन्म राजस्थान के पाली में हुआ था। वे सामाज की रूढ़िवादी परंपराओं की मुखर विरोधी रहीं।

प्रभु कब रे मिलोगे

प्रभु जी तुम दर्शन बिन
मोय घड़ी चैन नहीं
आवड़े॥टेक॥
अन्न नहीं भावे नींद न
आवे विरह सतावे मोय।
घायल ज्यूं घूमूं खड़ी रे
म्हारो दर्द न जाने
कोय॥१॥
दिन तो खाय गमायो री
रैन गमाई सोय।
प्राण गंवाया झूरतां रे नैन
गंवाया दोनु रोय॥२॥
जो मैं ऐसा जानती रे प्रीत
कियां दुख होय।
नगर ढुंढेरौ पीटती रे प्रीत
न करियो कोय॥३॥
पन्थ निहारूं डगर भुवारूं
ऊभी मारग जोय।
मीरा के प्रभु कब रे
मिलोगे तुम मिलयां सुख
होय॥४॥

हरो जन की भीर

हरि तुम हरो जन की भीर।
द्रोपदी की लाज राखी चट
बढ़ायो चीर॥
भगत कारण रूप नर हरि
धर।ह्यो आप समीर॥
हिरण्याकुस को मारि लीन्हो
धर।ह्यो नाहिन धीर॥
बूड़तो गजराज राख्यो कियौ
बाहर नीर॥
दासी मीरा लाल गिरधर
चरणकंवल सीर॥

मेरो दरद न जाणै कोय

हे री मैं तो प्रेम-दिवानी मेरो
दरद न जाणै कोय।
घायल की गति घायल जाणै
जो कोई घायल होय।
जौहरि की गति जौहरी जाणै
की जिन जौहर होय।
सूली ऊपर सेज हमारी सोवण
किस बिध होय।
गगन मंडल पर सेज पिया की
किस बिध मिलणा होय।
दरद की मारी बन-बन डोलूं बैद
मिल्या नहिं कोय।
मीरा की प्रभु पीर मिटेगी जद
बैद सांवरिया होय।

महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा स्वतंत्रता सेनानी और एक कुशल कवयित्री थीं। वो छायावादी युग के चार प्रमुख कवियों में से एक थीं। महादेवी का जन्म १९०७, में फर्रुखाबाद में हुआ था। साहित्य में उत्कृष्ट योगदान के लिए उनको पद्म विभूषण, साहित्य अकादमी फेलोशिप समेत कई सम्मानों से नवाजा गया। उनकी कविताओं में मनुष्यों और पशुओं के लिए प्रेम दिखता है।

मधुर मेरे दीपक जल-मधुर

युग-युग प्रतिदिन प्रतिक्षण
प्रतिपल
प्रियतम का पथ आलोकित कर!

सौरभ फैला विपुल धूप बन
मृदुल मोम-सा घुल रे,!तन-मृदु
दे प्रकाश का सिन्धु अपरिमित,
तेरे जीवन का अणु गल-गल
पुलक-पुलक मेरे दीपक जल!

तारे शीतल कोमल नूतन
माँग रहे तुझसे ज्वाला कण;
विश्व-शलभ सिर धुन कहता मैं
हाय,!न जल पाया तुझमें मिल
सिहर-सिहर मेरे दीपक जल!जलते
नभ में देख असंख्यक
स्नेह-हीन नित कितने दीपक
जलमय सागर का उर जलता;
विद्युत ले घिरता है बादल!
विहँस-विहँस मेरे दीपक जल!

द्रुम के अंग हरित कोमलतम
ज्वाला को करते हृदयंगम
वसुधा के जड़ अन्तर में भी
बन्दी है तापों की हलचल;
बिखर-बिखर मेरे दीपक जल!

मेरे निस्वासों से द्रुततर,
सुभग न तू बुझने का भय
कर।
मैं अंचल की ओट किये हूँ!
अपनी मृदु पलकों से चंचल
सहज-सहज मेरे दीपक जल!

सीमा ही लघुता का बन्धन
है अनादि तू मत घड़ियाँ गिन
मैं दृग के अक्षय कोषों से-
तुझमें भरती हूँ आँसू-जल!
सहज-सहज मेरे दीपक जल!

तुम असीम तेरा प्रकाश चिर
खेलेंगे नव खेल निरन्तर,
तम के अणु-अणु में विद्युत-सा
अमिट चित्र अंकित करता चल,
सरल-सरल मेरे दीपक जल!

तू जल-जल जितना होता क्षय;
यह समीप आता छलनामय;
मधुर मिलन में मिट जाना तू
उसकी उज्जवल स्मित में घुल
खिल!
मदिर-मदिर मेरे दीपक जल!
प्रियतम का पथ आलोकित कर!

सरोजिनी नायडू

नाइटिंगेल ऑफ इंडिया- सरोजिनी नायडू, स्वतंत्रता सेनानी होने के साथ-साथ प्रतिष्ठित कवि भी थीं। सरोजिनी भारत की पहली महिला राज्यपाल थीं। १८७९ को उनका जन्म हैदराबाद में हुआ था। उनकी कविताएँ लय से सजी होतीं हैं। "अ गोल्डेन थ्रेशोल्ड" और " द फेदर ऑफ डॉन" उनकी चर्चित किताबों में से हैं।

The new hath come and
now the old retires:
And so the past becomes a
mountain-cell,
Where lone, apart, old her-
mit-memories dwell
In consecrated calm, forgot-
ten yet
Of the keen heart that has-
tens to forget
Old longings in fulfilling
new desires"

नए आ चुके हैं, पुराने जा रहे हैं।

अतीत एक पर्वतकोष बन जाता है,

जहाँ एकांत में यादें बसती हैं।

प्रतिष्ठित, शांत, भूली हुईं लेकिन

उत्सुक दिलों की, जो नई

आकाँक्षाओं को

पूरा करने के लिए पुरानी आकाँक्षाएँ

भूलने को बेताब है।

बालमणि अम्मा

बालमणि अम्मा प्रतिष्ठित भारतीय कवयित्री हैं। अम्मा मलयालम में लिखती थीं। उनको लोग "पोयटेस ऑफ मदरहुड" कहते थे, यानि कि "मातृत्व की कवयित्री"। अम्मा का जन्म १९०९ में केरल के पुन्नयुरकुलम में हुआ था। वैसे तो अम्मा ने औपचारिक रूप से किसी प्रकार की शिक्षा नहीं ली थी,

लेकिन उनके मामा के किताबों के संग्रह ने उन्हें कवि बना दिया। उन्होंने साहित्य अकादमी फेलोशिप समेत कई पुरस्कार जीते थे। उनकी दो प्रसिद्ध रचनाएँ "अम्मा मुथास्सी" और "मज़्हुविन्ते कथा" हैं।

माँ भी कुछ नहीं जानती

"बतलाओ माँ ,मुझे बतलाओ,
कहाँ से,"? आ पहुँची यह छोटी सी बच्ची
अपनी अनुजाता को परसते-सहलाते हुए
मेरा पुत्र पूछ रहा था मुझसे;
यह पुराना सवाल, जिसे हजारों लोगों ने
पहले भी बार-बार पूछा है।
प्रश्न जब उन पल्लव-अधरों से फूट पड़ा
तो उस से नवीन मकरन्द की कणिकाएँ चू पड़ीं;
आह,जिज्ञासा जब पहली बार आत्मा से फूटती है
तब कितनी आस्वाद्य बन जाती है
तेरी मधुरिमा ? कहाँ से ? कहाँ से !
मेरा अन्तःकरण भी रटने लगा यह आदिम मन्त्र।
समस्त वस्तुओं में मैं उसी की प्रतिध्वनि सुनने लगी

हे प्रत्युत्तरहीण ;अपने अन्तरंग के कानों से
! महाप्रश्न
बुद्धिवादी मनुष्य की उद्धत आत्मा में
जिसने तुझे उत्कीर्ण कर दिया है
उस दिव्य कल्पना की जय हो !
अथवा तुम्हीं हो वह स्वर्णिम कीर्ति-पताका
जो जता रही है सृष्टि में मानव की महत्ता।
ध्वनित हो रहे हो तुम
समस्त चराचरों के भीतर शायद,आत्मशोध की
प्रेरणा देने वाले
फैली हुई फुनगियों में अपनी चोंचों से
अपने आप को टटोल रही हैं, चिड़ियाँ।
खोज रहा है अश्वत्थ अपनी दीर्घ जटाओं को फैलाकर
मिट्टी में छिपे मूल बीज को; सदियों से ,और
अपने ही शरीर का विश्लेषण कर रहा है पहाड़।
ओ मेरी कल्पने, व्यर्थ ही तू प्रयत्न कर रही है
ऊँचे अलौकिक तत्वों को छूने के लिये।
कहाँ तक ऊँची उड़ सकेगी यह पतंग
मेरे मस्तिष्क की पकड़ में ?
झुक जाओ मेरे सिर, मुन्ने के जिज्ञासा भरे
! प्रश्न के सामने
गिर जाओ, विज्ञान-हे ग्रंथ
मेरे सिर पर के निरर्थक भार-से
तुम इस मिट्टी पर।
तुम्हारे पास स्तन्य को एक कणिका भी नहीं
बच्चे की बढ़ी हुई सत्य-तृष्णा को -
बुझाने के लिये।
इस नन्हीं सी बुद्धि को थामने-संभालने के लिये
कोई शक्तिशाली आधार भी तुम्हारे पास नहीं !
हो सकता है, मानव की चिन्ता पृथ्वी से टकराये
और सिद्धान्त की चिनगारियाँ बिखेर दे।
पर, -अंधकार में है उस विराट सत्य की सार सत्ता
आज भी यथावत।
घड़ियाँ भागी जा रही थीं सौ-सौ चिन्ताओं को कुचलकर;
विस्मयकारी वेग के साथ उड़-उड़ कर छिप रही थीं
खारे समुद्र की बदलती हुई भावनाएँ
अव्यक्त आकार के साथ,
अन्तरिक्ष के पथ पर।
मेरे बेटे ने प्रश्न दुहराया, माता के मौन पर अधीर होकर।
"मेरे लाल ,मेरी बुद्धि की आशंका अभी तक ठिठक रही है
इस विराट प्रश्न में डुबकी लगाने के लिये और जिस को
तल-स्पर्शी आँखों ने भी नहीं देखा है, उस वस्तु को टटोलने के लिए।
हम सब कहाँ से आये ?
मैं कुछ भी नहीं जानती !
तुम्हारे इन नन्हें हाथों से ही नापा जा सकता है
तुम्हारी माँ का तत्त्व-बोध।"
अपने छोटे से प्रश्न का जब कोई सीधा प्रत्युत्तर नहीं मिल सका
तो मुन्ना मुसकराता हुआ बोल उठा
"माँ भी कुछ नहीं जानती।"

कमला सुरैया

कमला सुरैया को माधवी दास और कमला दास के नाम से भी जाना जाता है। वो मलयालम की लेखिका थीं और कविताएँ अंग्रेजी में लिखती थीं। कमला सुरैया १९३४ में केरल के पुन्नयुरकुलम में पैदा हुई थीं। महिलाओं की लैंगिकता पर उनके रवैये की खूब चर्चा और सराहना होती थी। कम ही औरतें इस मुद्दे पर खुलकर बोल सकती थीं। "समर इन कैलकटा" और "द डिसेंडेंट्स" उनकी सबसे लोकप्रिय कविता संग्रह में से हैं।

Don't write in English, they
said, English is
Not your mother-tongue.Why
not leave
Me alone, critics, friends, vis-
iting cousins,
Every one of you? Why not let
me speak in
Any language I like? The lan-
guage I speak,
Becomes mine, its distortions,
its queernesses
All mine, mine alone." – from
An Introduction, Kamala Das.

उन्होंने कहा अंग्रेजी में मत लिखो,
अंग्रेजी तुम्हारी मातृभाषा नहीं है।
मुझे अकेला क्यों नहीं छोड़ देते,
आलोचक, मित्र,
मिलने आने वाले दूर के भाई-बहन,
आप सब?
मुझे बोलने क्यों नहीं देते, उस भाषा
में जिसमें मैं चाहूँ?
जिस भाषा में मैं बोलती हूँ, वो मेरी
बन जाती है।
उसकी खूबियाँ-खामियाँ, सब मेरी हैं,
सिर्फ मेरी।

अमृता प्रीतम

अमृता प्रीतम प्रतिष्ठित पंजाबी लेखिका थीं। वो बीसवीं सदी की सबसे लोकप्रिय पंजाबी कवयित्री थीं। इनका जन्म पंजाब के गुजरनवाला में हुआ था। अपने 6 दशक के करियर में उन्होंने १०० से ज्यादा किताबें और कविताएँ लिखीं। १९५६ में उनको साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया। उनकी लोकप्रिय रचनाएँ "आज आखाँ वारिस शाह नू" और "पिंजर" है।

मैं तैनू फ़िर मिलांगी कित्थे ? किस तरह
पता नई
शायद तेरे ताखियल दी चिंगारी बण के
तेरे केनवास ते उतरांगी
जा खोरे तेरे केनवास दे उत्ते
इक रहस्म्यी लकीर बण के
खामोश तैनू तक्दी रवांगी तेरे केनवास नु
वलांगी
पता नही किस तरह कित्थे
पर तेनु जरुर मिलांगी
जा खोरे इक चश्मा बनी होवांगी
ते जिवें झर्नियाँ दा पानी उड्दा
मैं पानी दियां बूंदा
तेरे पिंडे ते मलांगी
ते इक ठंडक जेहि बण के
तेरी छाती दे नाल लगांगी

मैं होर कुच्छ नही जानदी
पर इणा जानदी हां
कि वक्त जो वी करेगा
एक जनम मेरे नाल तुरेगा
एह जिस्म मुक्दा है
ता सब कुछ मूक जांदा हैं
पर चेतना दे धागे

या फ़िर एक चश्मा बनी
जैसे झरने से पानी उड़ता है
मैं पानी की बूंदें
तेरे बदन पर मलूंगी
और एक ठंडक सी बन कर
तेरे सीने से लगूंगी
मैं और कुछ नही जानती
पर इतना जानती हूँ
कि वक्त जी भी करेगा
यह जनम मेरे साथ चलेगा
यह जिस्म खतम होता है
तो सब कुछ खत्म हो जाता है
पर चेतना के धागे
कायनात के कण होते हैं
मैं उन कणों को चुनुंगी
मैं तुझे फ़िर मिलूंगी !!

नंदिनी साहु

नन्दिनी साहू भारत की जानी मानी कवयित्री, लेखिका और आलोचक हैं। उन्होंने अंग्रेजी में कई किताबें और कविताएं लिखी हैं। नन्दिनी इंदिरा गांधी ओपन युनिवर्सिटी में अंग्रेजी की एसोसिएट प्रोफेसर हैं। उन्होंने इंग्लिश लिट्रेचर में दो गोल्ड मेडल और शिक्षा रत्न पुरस्कार भी जीता

Does your laugh tear your
shrunken lips?
Open your wardrobe, cover the breast of the poor,
apply on your lips the balm of a millennium's rebellion.
Who says death is the only truth?
See, your body of fog is still seated on the throne.
You still shine in the firmament of stars." – .

क्या तुम्हारी हँसी तुम्हारे संकुचित होंठों को

चीर रही है?

अपनी भरी हुई अलमारी खोलो, और उन गरीबो

की नंगी छातियो को ढँको।

अपने सूखे होंठों पर इस सदी के विद्रोहोयियों

के विद्रोह का लेप लगाओ।

कौन कहता है कि मृत्यु ही एकमात्र सत्य है?

देखो, तुम्हारा शरीर धुँआ बनकर भी तख्त पर विराजमान है।
और तुम अब भी सितारों के इस नभमंडल में चमक रहे हो।

काव्य, कविता या पद्य, साहित्य की विधा

काव्य, **कविता** या **पद्य**, साहित्य की वह विधा है जिसमें किसी कहानी या मनोभाव को कलात्मक रूप से किसी भाषा के द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है। भारत में कविता का इतिहास और कविता का दर्शन बहुत पुराना है। इसका प्रारंभ भरतमुनि से समझा जा सकता है। कविता का शाब्दिक अर्थ है काव्यात्मक रचना या कवि की कृति, जो छन्दों की शृंखलाओं में विधिवत बांधी जाती है।

काव्य वह वाक्य रचना है जिससे चित्त किसी रस या मनोवेग से पूर्ण हो। अर्थात् वहजिसमें चुने हुए शब्दों के द्वारा कल्पना और मनोवेगों का प्रभाव डाला जाता है। रसगंगाधर में 'रमणीय' अर्थ के प्रतिपादक शब्द को 'काव्य' कहा है। 'अर्थ की रमणीयता' के अंतर्गत शब्द की रमणीयता (शब्दलंकार) भी समझकर लोग इस लक्षण को स्वीकार करते हैं। पर 'अर्थ' की 'रमणीयता' कई प्रकार की हो सकती है। इससे यह लक्षण बहुत स्पष्ट नहीं है। साहित्य दर्पणाकार विश्वनाथ का लक्षण ही सबसे ठीक जँचता है। उसके अनुसार 'रसात्मक वाक्य ही काव्य है'। रस अर्थात् मनोवेगों का सुखद संचार की काव्य की आत्मा है।

काव्यप्रकाश में काव्य तीन प्रकार के कहे गए हैं, ध्वनि, गुणीभूत व्यंग्य और चित्र। ध्वनि वह है जिस, में शब्दों से निकले हुए अर्थ (वाच्य) की अपेक्षा छिपा हुआ अभिप्राय (व्यंग्य) प्रधान हो। गुणीभूत ब्यंग्य वह है जिसमें गौण हो। चित्र या अलंकार वह है जिसमें बिना ब्यंग्य के चमत्कार हो। इन तीनों को क्रमशः उत्तम, मध्यम और अधम भी कहते हैं। काव्यप्रकाशकार का जोर छिपे हुए भाव पर अधिक जान पड़ता है, रस के उद्रेक पर नहीं। काव्य के दो और भेद किए गए हैं, महाकाव्य और खंड काव्य। महाकाव्य सर्गबद्ध और उसका नायक कोई देवता, राजा या धीरोदात्त गुंण संपन्न क्षत्रिय होना चाहिए। उसमें शृंगार, वीर या शांत रसों में से कोई रस प्रधान होना चाहिए। बीच बीच में करुणा; हास्य इत्यादि और रस तथा और और लोगों के प्रसंग भी आने चाहिए। कम से कम आठ सर्ग होने चाहिए। महाकाव्य में संध्या, सूर्य, चंद्र, रात्रि, प्रभात, मृगया, पर्वत, वन, ऋतु, सागर, संयोग, विप्रलम्भ, मुनि, पुर, यज्ञ, रणप्रयाण, विवाह आदि का यथास्थान सन्निवेश होना चाहिए। काव्य दो प्रकार का माना गया है, दृश्य और श्रव्य। दृश्य काव्य वह है जो अभिनय द्वारा दिखलाया जाय, जैसे, नाटक, प्रहसन, आदि जो पढ़ने और सुनेन योग्य हो, वह श्रव्य है। श्रव्य काव्य दो प्रकार का होता है, गद्य और पद्य। पद्य काव्य के महाकाव्य और खंडकाव्य दो भेद कहे जा चुके हैं। गद्य काव्य के भी दो भेद किए गए हैं- कथा और आख्यायिका। चंपू, विरुद और कारंभक तीन प्रकार के काव्य और माने गए है।

काव्य, कविता या पद्य, साहित्य की विधा

काव्य के भेद दो प्रकार से किए गए हैं–
स्वरूप के अनुसार काव्य के भेद और
शैली के अनुसार काव्य के भेद

स्वरूप के अनुसार काव्य के भेद|

स्वरूप के आधार पर काव्य के दो भेद हैं - श्रव्यकाव्य एवं दृश्यकाव्य।

श्रव्य काव्य जिस काव्य का रसास्वादन दूसरे से सुनकर या स्वयं पढ़ कर किया जाता है उसे श्रव्य काव्य कहते हैं। जैसे रामायण और महाभारत।

श्रव्य काव्य के भी दो भेद होते हैं - प्रबन्ध काव्य तथा मुक्तक काव्य।

प्रबंध काव्य

इसमें कोई प्रमुख कथा काव्य के आदि से अंत तक क्रमबद्ध रूप में चलती है। कथा का क्रम बीच में कहीं नहीं टूटता और गौण कथाएँ बीच-बीच में सहायक बन कर आती हैं। जैसे रामचरित मानस।

प्रबंध काव्य के दो भेद होते हैं - महाकाव्य एवं खण्डकाव्य।

1- **महाकाव्य** इसमें किसी ऐतिहासिक या पौराणिक महापुरुष की संपूर्ण जीवन कथा का आद्योपांत वर्णन होता है। महाकाव्य में ये बातें होना आवश्यक हैं-

महाकाव्य का नायक कोई पौराणिक या ऐतिहासिक हो और उसका धीरोदात्त होना आवश्यक है। जीवन की संपूर्ण कथा का सविस्तार वर्णन होना चाहिए।

श्रृंगार ,वीर और शांत रस में से किसी एक की प्रधानता होनी चाहिए। यथास्थान अन्य रसों का भी प्रयोग होना चाहिए।

उसमें सुबह शाम दिन रात नदी नाले वन पर्वत समुद्र आदि प्राकृतिक दृश्यों का स्वाभाविक चित्रण होना चाहिए।

आठ या आठ से अधिक सर्ग होने चाहिए ,प्रत्येक सर्ग के अंत में छंद परिवर्तन होना चाहिए तथा सर्ग के अंत में अगले अंक की सूचना होनी चाहिए।

काव्य, कविता या पद्य, साहित्य की विधा

2- खंडकाव्य इसमें किसी की संपूर्ण जीवनकथा का वर्णन न होकर केवल जीवन के किसी एक ही भाग का वर्णन होता है। खंड काव्य में ये बातें होना आवश्यक हैं-
कथावस्तु काल्पनिक हो।
उसमें सात या सात से कम सर्ग हों।
उसमें जीवन के जिस भाग का वर्णन किया गया हो वह अपने लक्ष्य में पूर्ण हो।
प्राकृतिक दृश्य आदि का चित्रण देश काल के अनुसार और संक्षिप्त हो।

मुक्तक

इसमें केवल एक ही पद या छंद स्वतंत्र रूप से किसी भाव या रस अथवा कथा को प्रकट करने में समर्थ होता है। गीत कवित्त दोहा आदि मुक्तक होते हैं।

दृश्य काव्य

जिस काव्य की आनंदानुभूति अभिनय को देखकर एवं पात्रों से कथोपकथन को सुन कर होती है उसे दृश्य काव्य कहते हैं।
जैसे नाटक में या चलचित्र में।

शैली के अनुसार काव्य के भेद

1- पद्य काव्य - इसमें किसी कथा का वर्णन काव्य में किया जाता है, जैसे गीतांजलि
2- गद्य काव्य - इसमें किसी कथा का वर्णन गद्य में किया जाता है, जैसे जयशंकर की कमायनी ||| गद्य में काव्य रचना करने के लिए कवि को छंद शास्त्र के नियमों से स्वच्छंदता प्राप्त होती है।
3- चंपू काव्य - इसमें गद्य और पद्य दोनों का समावेश होता है। मैथिलीशरण गुप्त की 'यशोधरा' चंपू काव्य है।